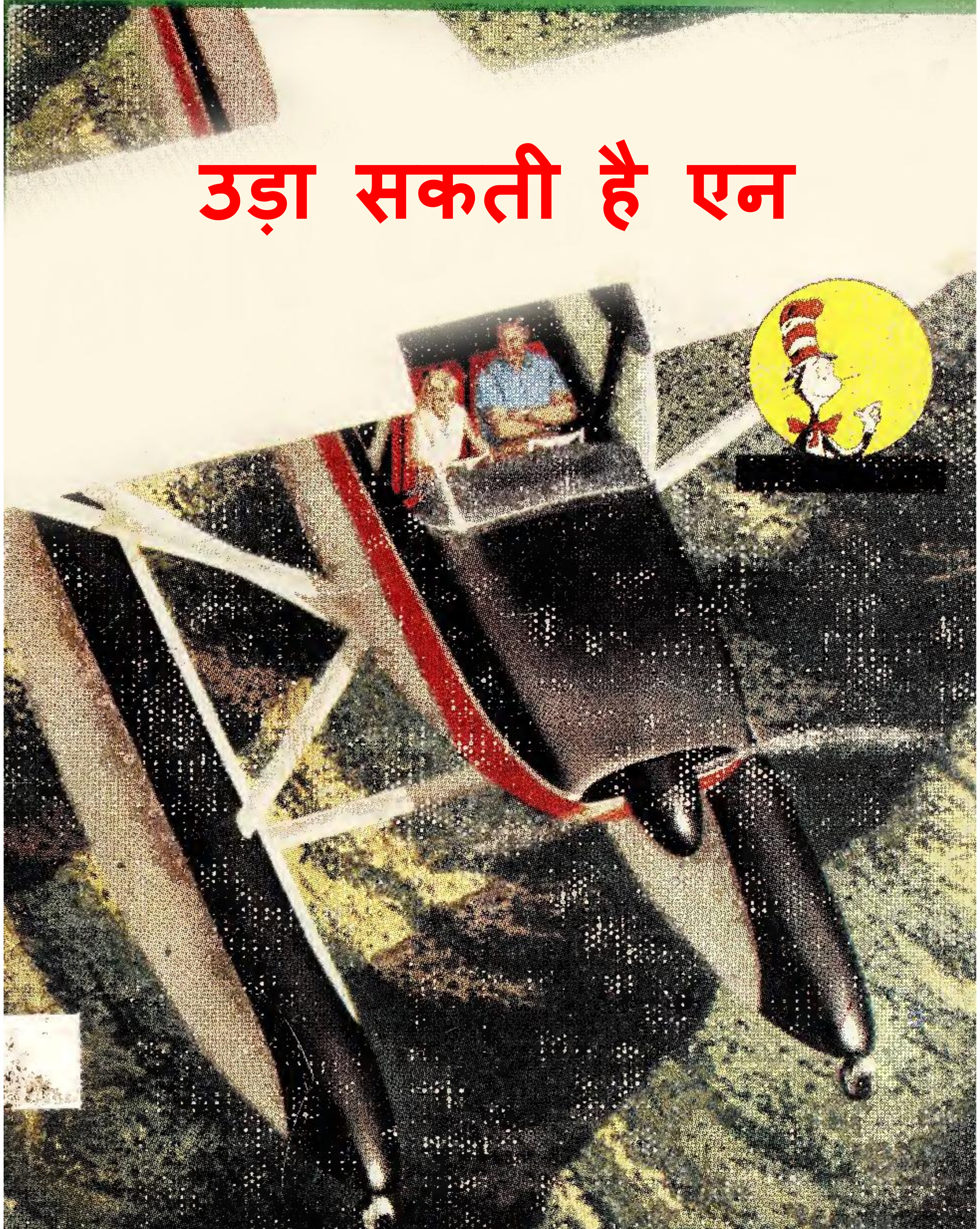
उड़ा सकती है एन



लेखनः फ्रैड फ्लेगर, चित्रः रॉबर्ट लॉपशायर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



उड़ा सकती है एन



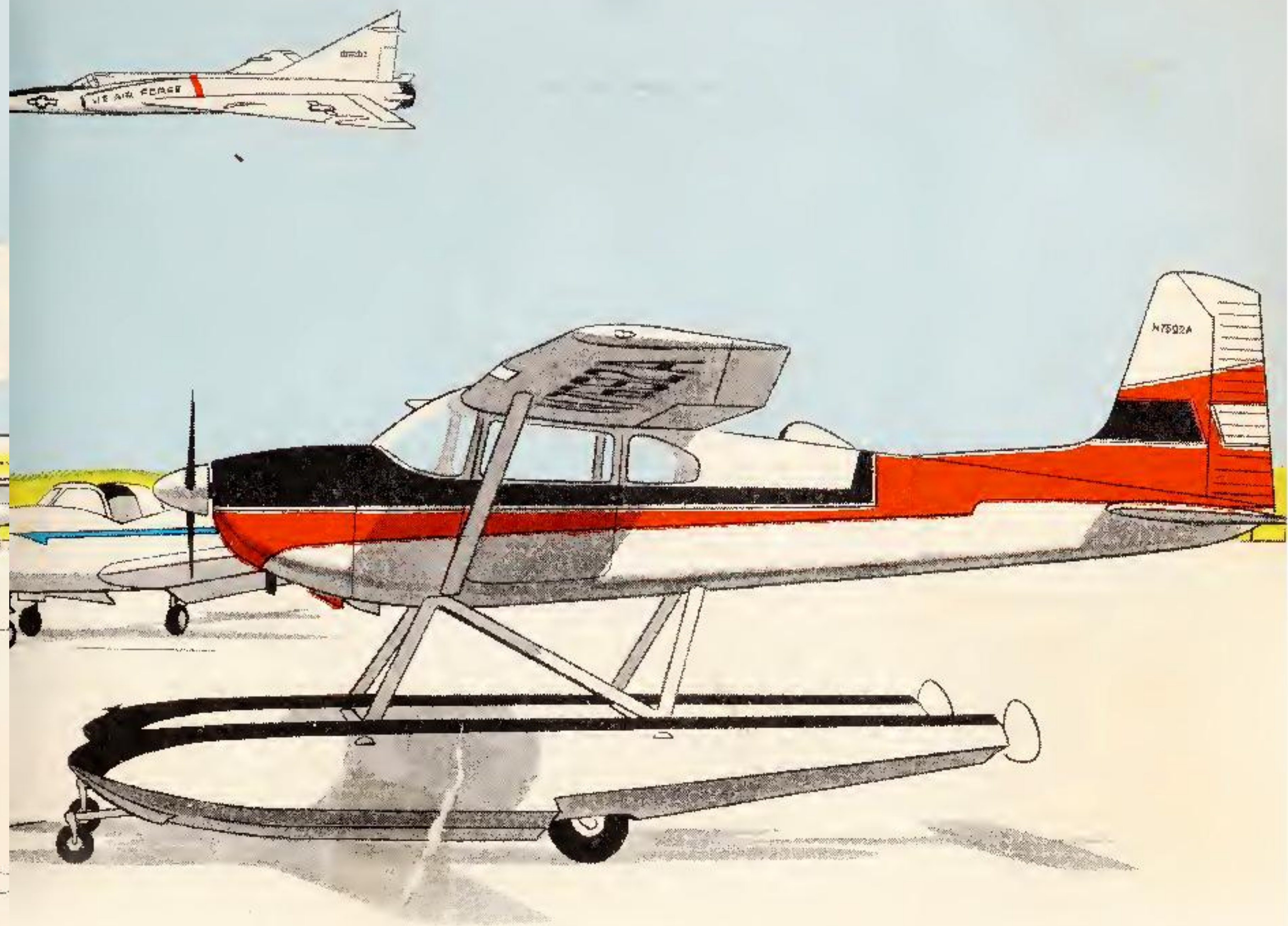
लेखनः फ्रैड फ्लेगर
चित्रः रॉबर्ट लॉपशायर
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एन के लिए यह एक बड़ा दिन है।
उसके पिता उसे कैम्पिंग के लिए
अपने नए हवाई जहाज़ में ले जाने वाले हैं।
एन पहले कभी हवाई जहाज़ में उड़ी नहीं है।
"क्या मुझे मज़ा आएगा?" उसने पूछा।
"क्या मुझे अच्छा लगेगा?"
उसके पिता हंसे,
"तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा," वे बोले।
"तुम जल्द ही जान लोगी।"

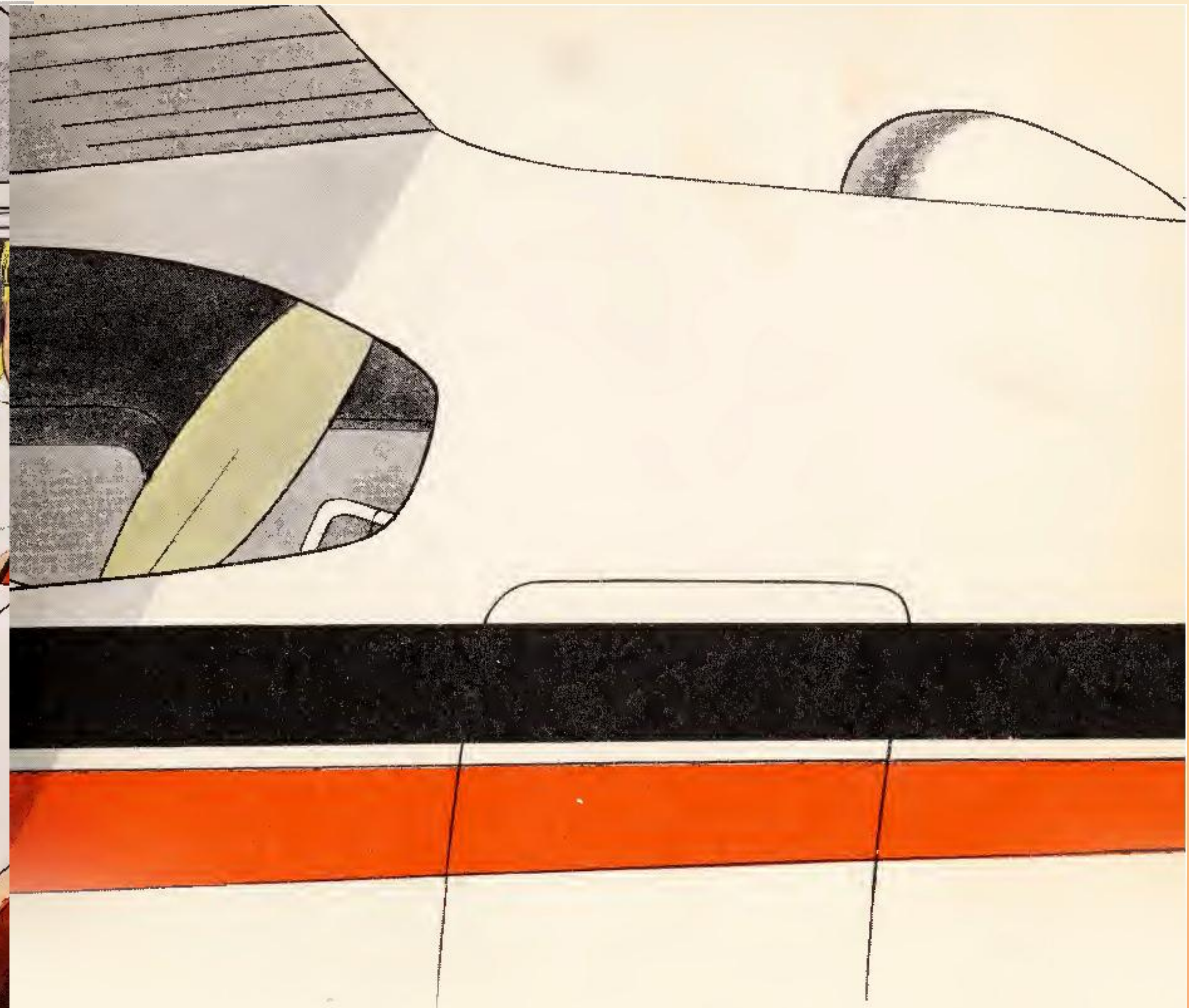
हवाई अड्डे पर एन को कई तरह के
हवाई जहाज दिखाई दिए।



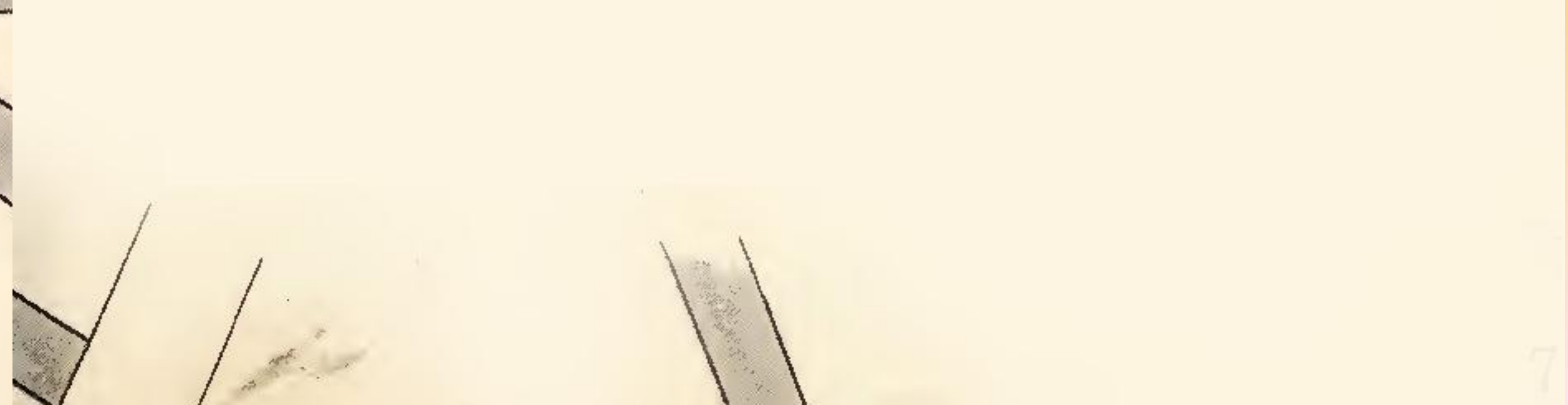


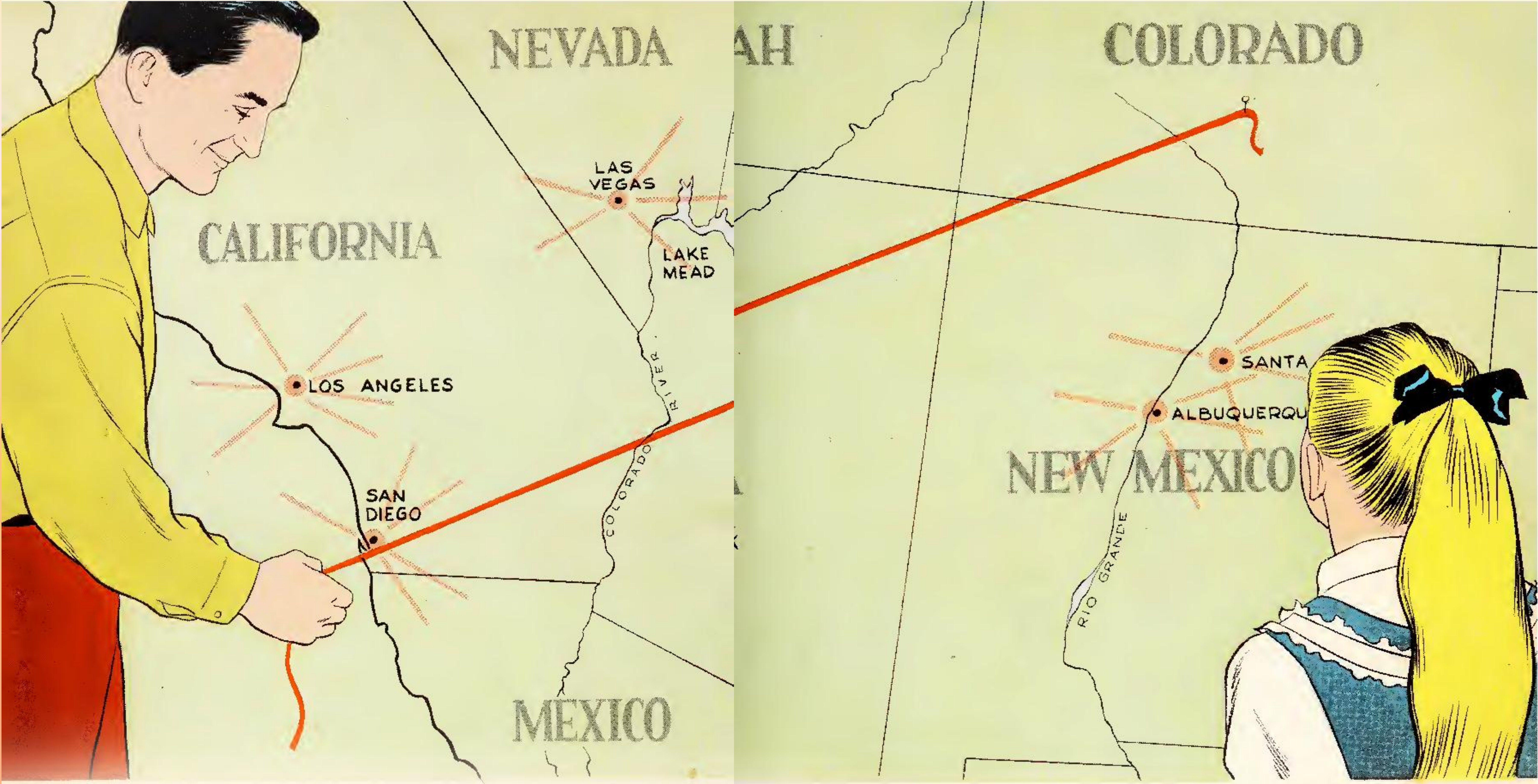
एन बोल पड़ी, ''उस छोटे-से
जहाज़ को तो देखो, जिसके पहियों
के ऊपर कुछ अजीब-सी चीज़ें हैं।''
"वह मेरा जहाज़ है,'' पिता ने जवाब दिया।
''वे चीज़ें फ्लोटस् कहलाती हैं। उनकी मदद
से हम जहाज़ को पानी में भी उतार सकते हैं।
यह बढ़िया जहाज़ है, और उसमें हम
तुम्हारा सारा सामान भी रख सकेंगे।"





"आप सही कह रहे थे," एन ने कहा।
"मैं सारा सामान रख सकी।
क्या हम अब उड़ सकते हैं?"
"अभी नहीं," पिता बोले। "हमें पहले
कई चीज़ें करनी होंगी।
चलो, मैं दिखाता हूँ।"





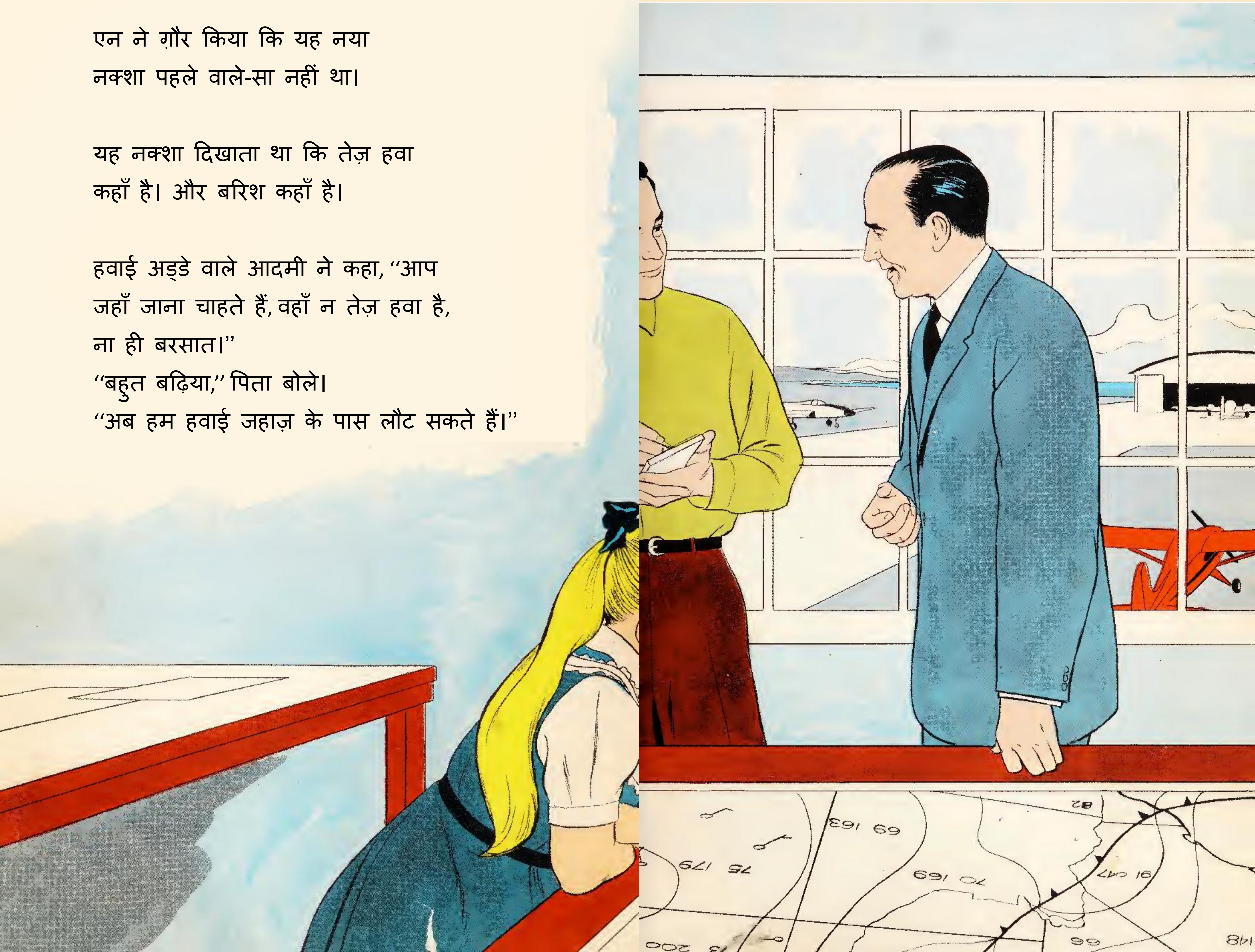
पिता ने एन को
एक हवाई नक्शा दिखाया।
उन्होंने कैम्प लेक वुड
तक का रास्ता दिखाया।

"अब हमें क्या करना है?"
एन ने जानना चाहा।
पिता बोले, "अब हमें
एक और नक्शा देखना होगा।"

एन ने ग़ौर किया कि यह नया
नक्शा पहले वाले-सा नहीं था।

यह नक्शा दिखाता था कि तेज़ हवा
कहाँ है। और बरिश कहाँ है।

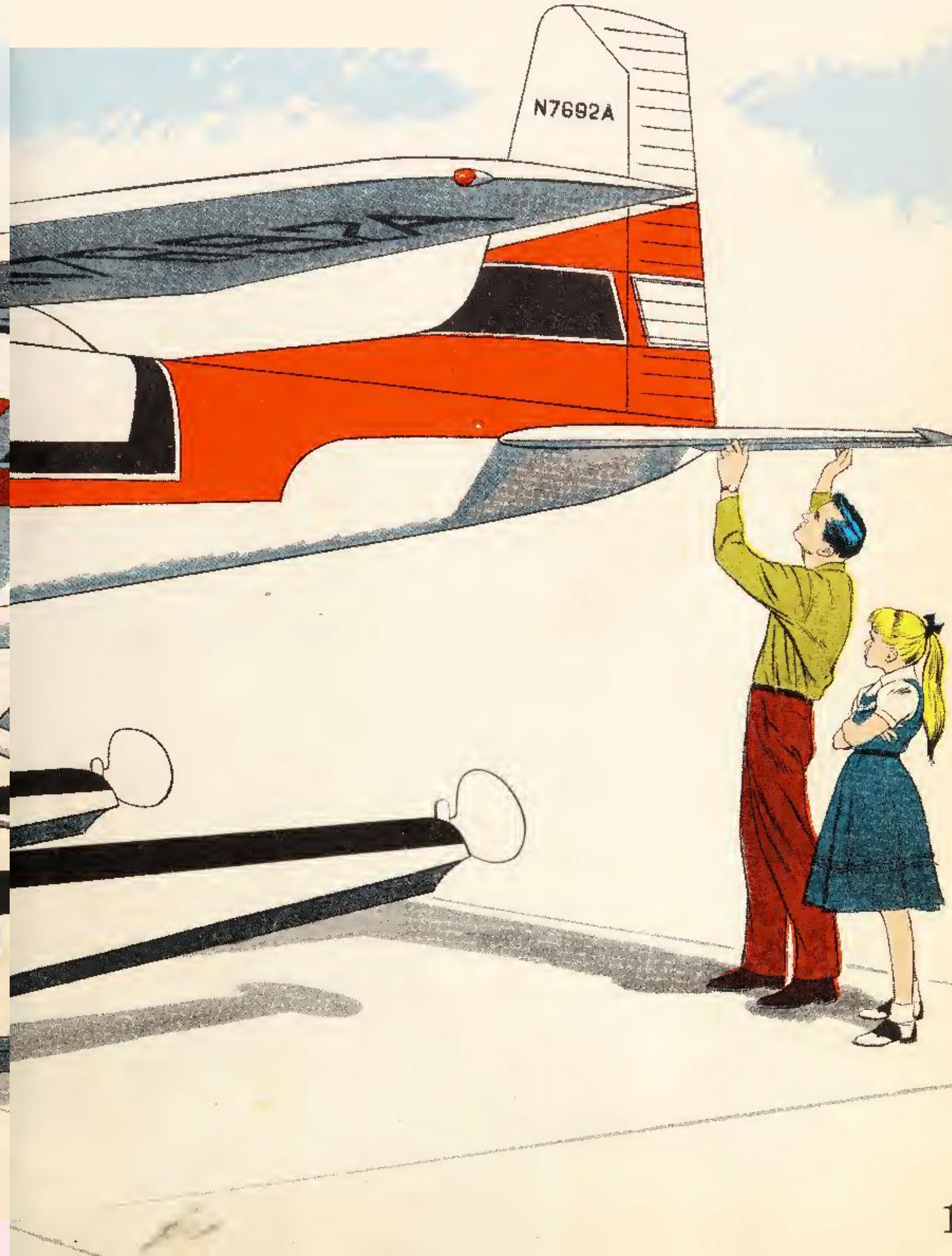
हवाई अड्डे वाले आदमी ने कहा, "आप
जहाँ जाना चाहते हैं, वहाँ न तेज़ हवा है,
ना ही बरसात।"
"बहुत बढ़िया," पिता बोले।
"अब हम हवाई जहाज़ के पास लौट सकते हैं।"



पिता और एन अब भी
जहाज़ में नहीं घुसे।
एक व्यक्ति ने जहाज़ में पेट्रोल डाला।



पिता ने हवाई जहाज़ को हर ओर से जाँचा।
सब कुछ ठीक वैसा था, जैसा होना चाहिए था।
आख़िरकार पिता और एन जहाज़ में बैठ सकते थे।

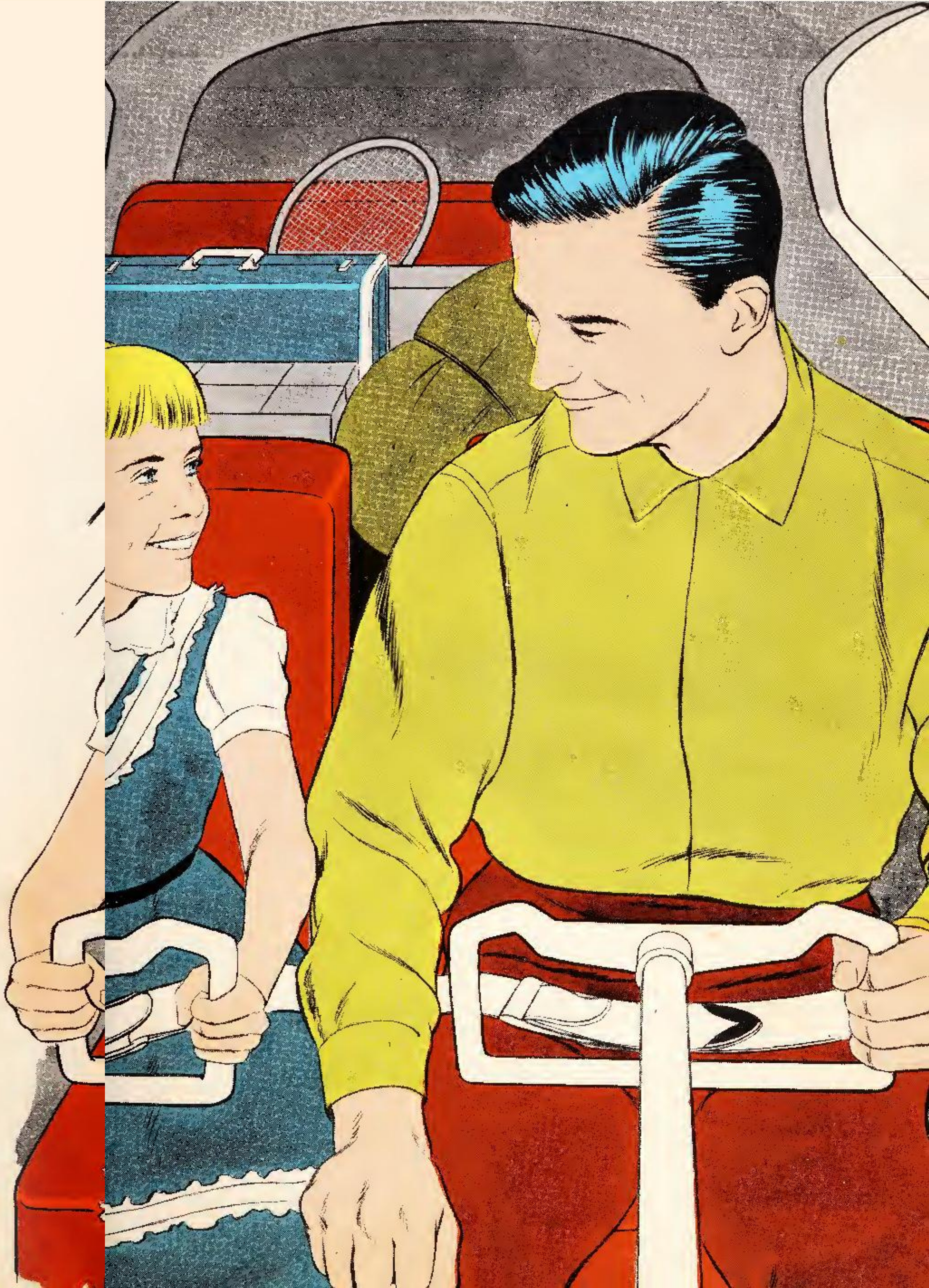


“अब हम उड़ने को तैयार हैं,” पिता ने कहा।

“मुझे अपने स्टीयरिंग व्हील (चालक पहिया) से क्या करना है?” एन ने पूछा।

पिता हंसे। “फिलहाल तो कुछ भी नहीं,” उन्होंने कहा।

“तुम सिर्फ अपनी सीट की रक्षा पेटी बांधो।
अगर झटके लगे
तो वह तुम्हें महफ़ूज़ रखेगी।”





वे जहाज़ में रन-वे
(उड़न पट्टी) तक आए।
वे कतार में पहले थे।
अब क्या होना था?



एन ने अपने पिता को हवाई अड्डे के
नियंत्रण कक्ष से बात करते सुना।
"यह जहाज़ सात, छह,
नौ, दो है। क्या हम अब उड़ सकते हैं?"

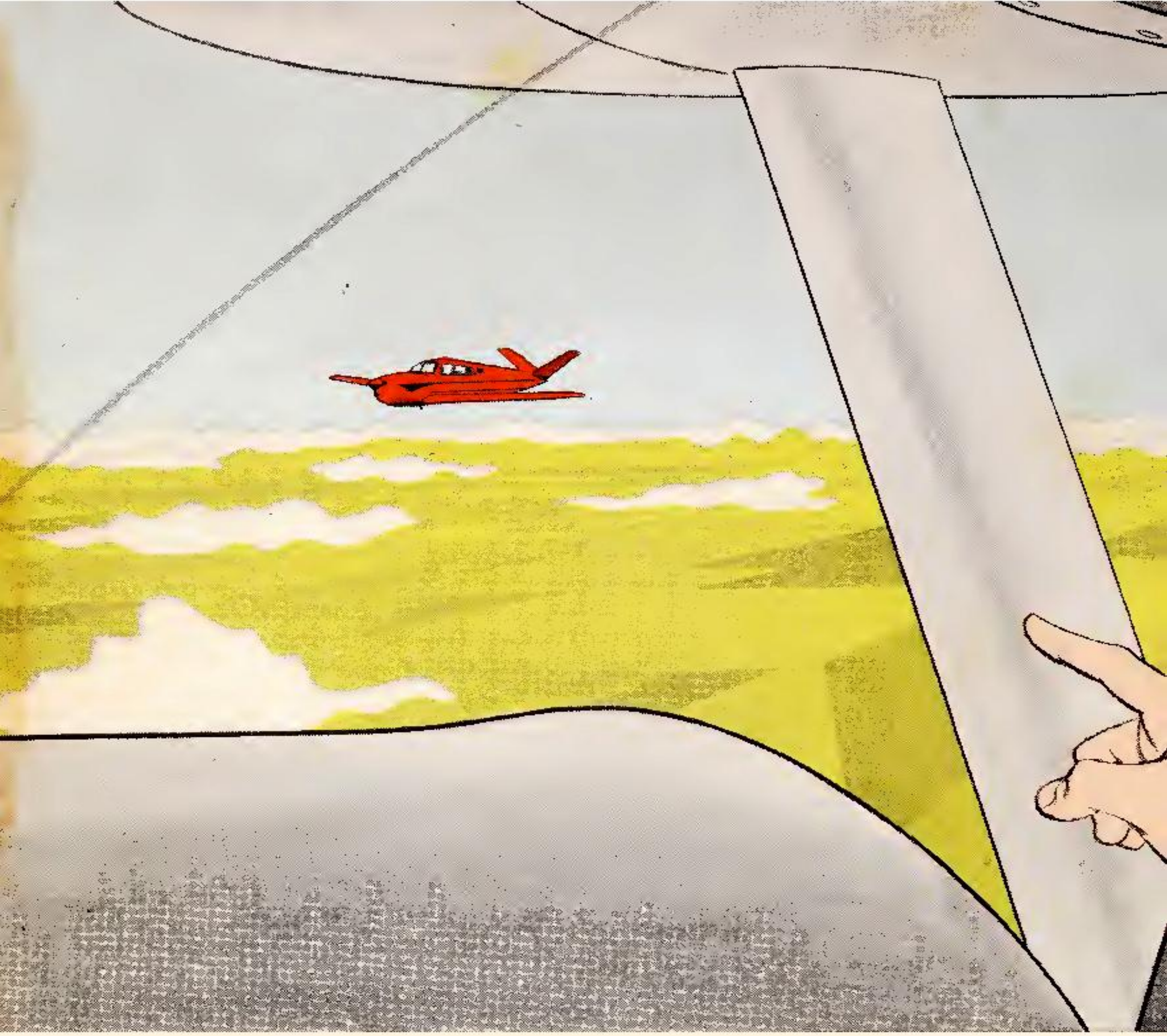
एन ने नियंत्रण कक्ष के व्यक्ति को कहते सुना,
"ठीक है, जहाज़ सात, छह, नौ, दो। तुम जा सकते हो।"
"आख़िरकार!" एन बोली।

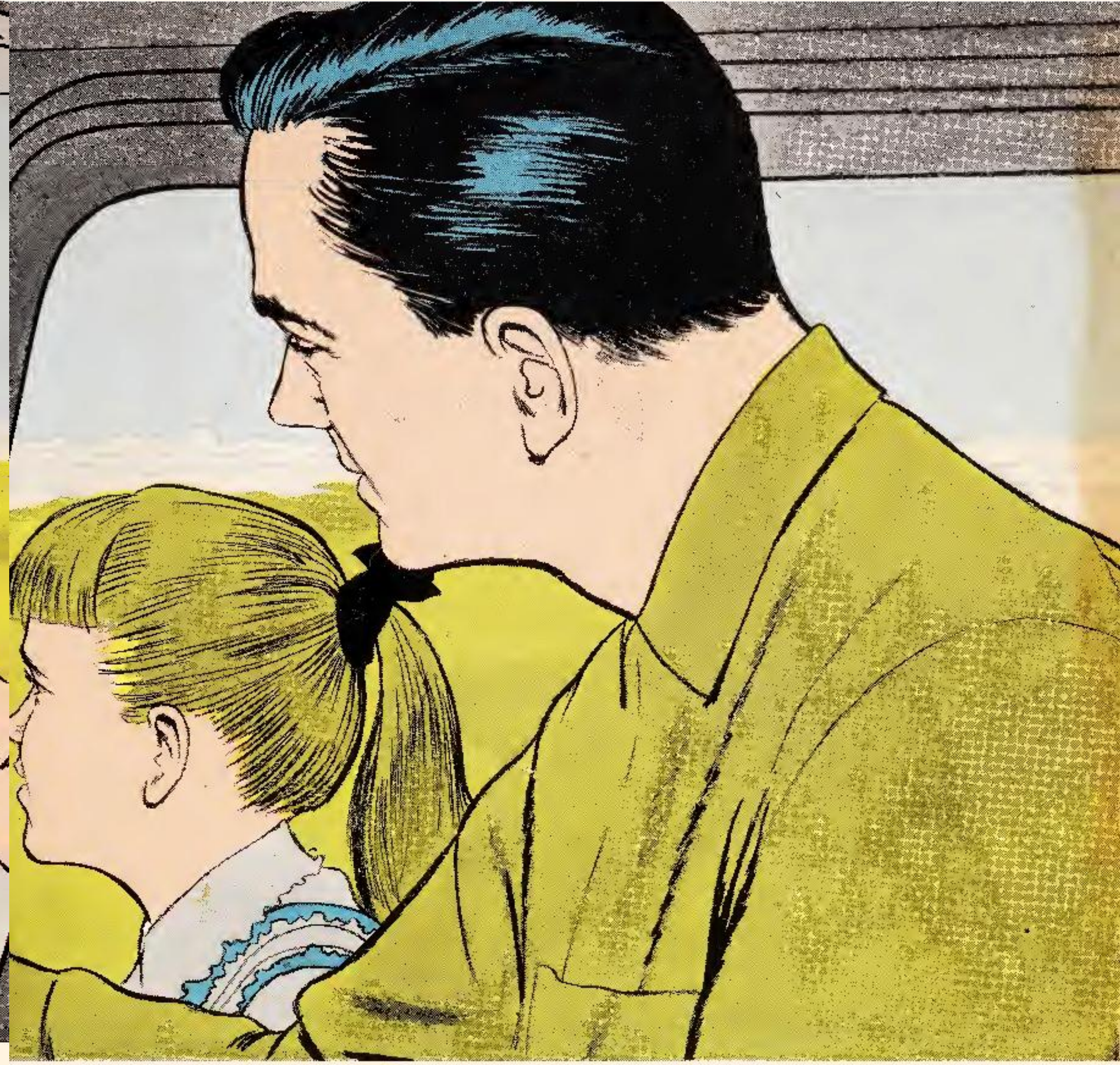


वे उड़ चले।
वे हवा में ऊपर उठे। तेज़ी से।
पिता ने चालक पहिए को पीछे खींचा।
इससे जहाज़ के पंख ऊपर उठे।

हवा ने जहाज़ के पंखों को ज़ोर से
धकेला। अब जहाज़ काफ़ी ऊपर उठ चुका था।
नीचे ज़मीन पर घर तेज़ी से दौड़ते लगे।

''अरे!'' एन बोली पड़ी, ''यह तो कमाल है!''
''मुझे बहुत अच्छा लगा।''



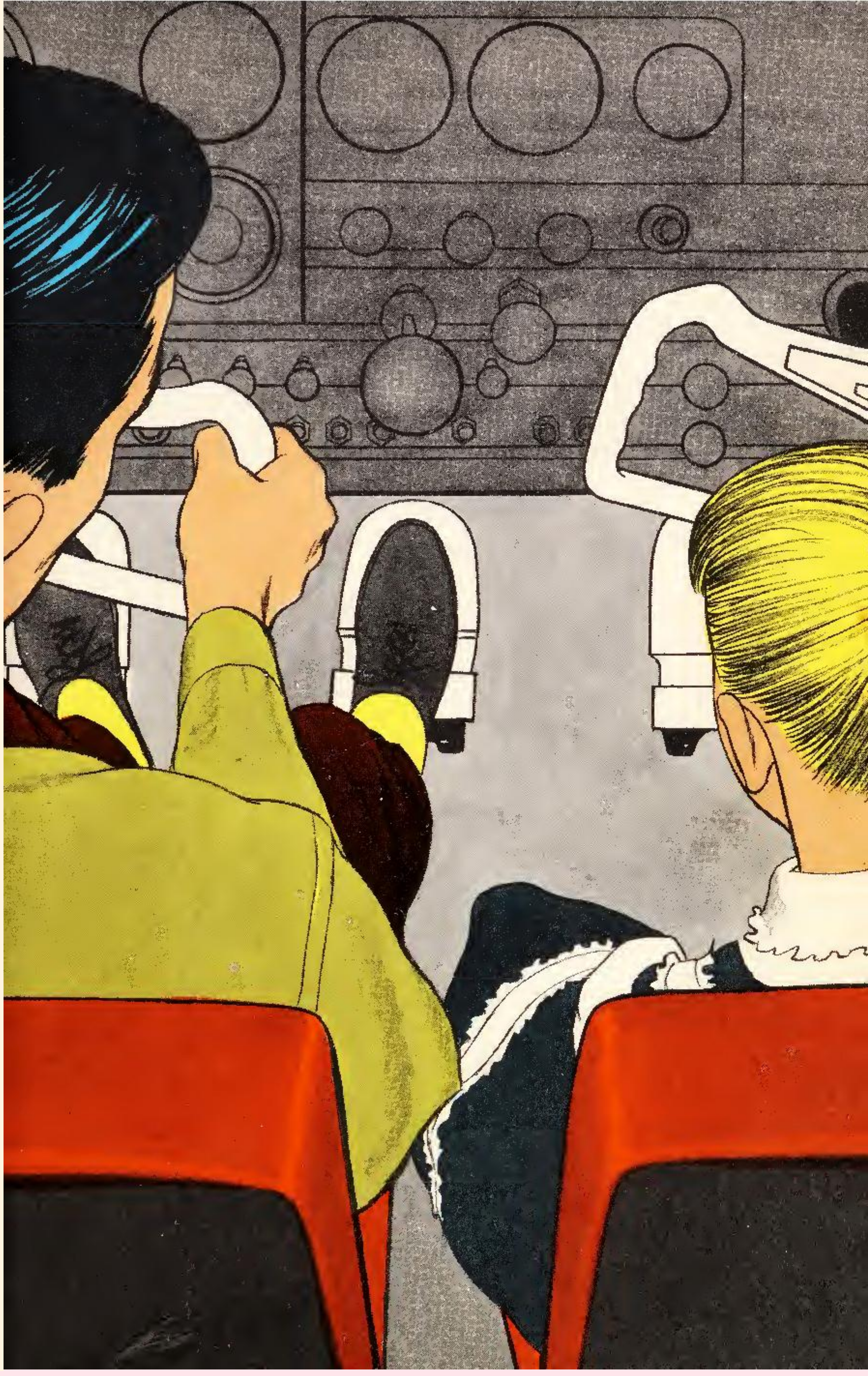


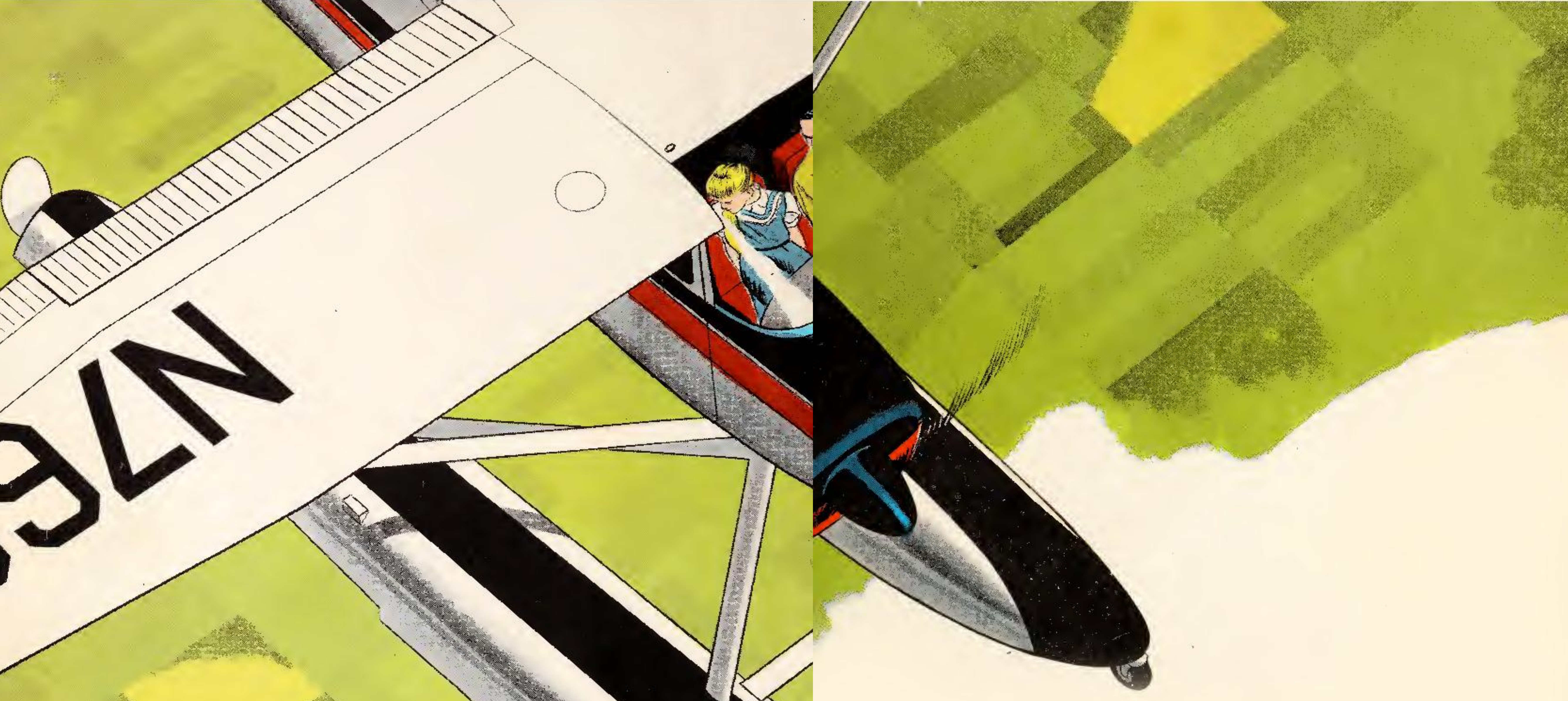
वे ऊपर, और ऊपर उठते गए।
अब वे बहुत ऊपर थे। वे हवाई अड्डे से
बहुत ही दूर पहुँच चुके थे।
वहाँ एक और जहाज़ भी था।

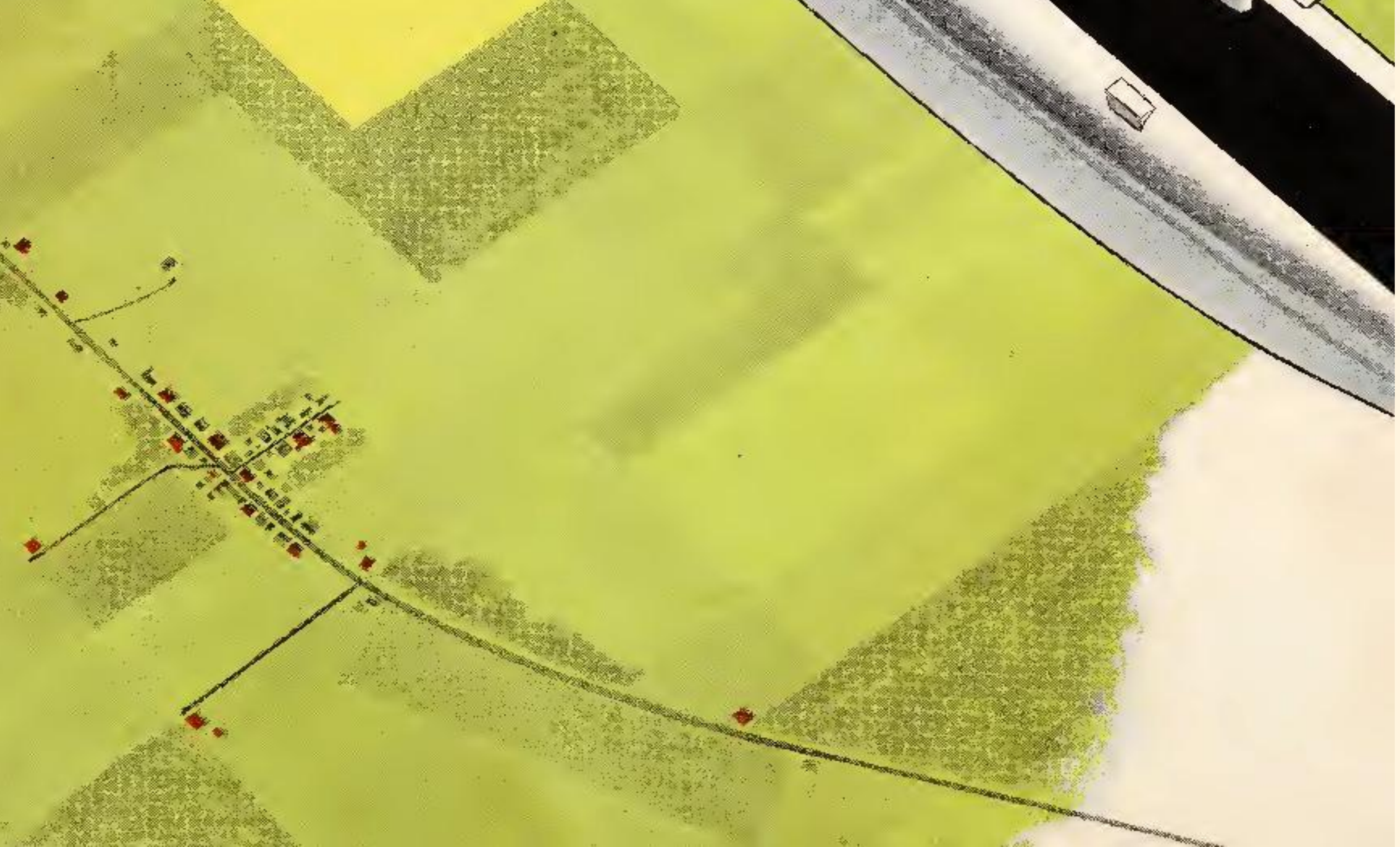
''देखो,'' पिता ने कहा, ''हमें उस जहाज़
के रास्ते से हटना पड़ेगा।
वह हमारे बहुत पास है।''

''कैसे?'' एन ने पूछा। ''हम उसके
रास्ते से भला कैसे हटेंगे?''

पिता हंसे।
“हम दाहिनी ओर जाएंगे,” वे बोले।
ऐसा करने के लिए मुझे अपना दाहिना
पैडल नीचे दबाना पड़ेगा और साथ ही
अपने चालक पहिए को दाहिनी ओर मोड़ना होगा।
तुम्हारा चालक पहिया भी यही कर सकता है।
तुम अपने चालक पहिए से
जहाज़ को उड़ा सकती हो!”
“ओह!” एन बोली,
“इसमें तो मज़ा आएगा।”

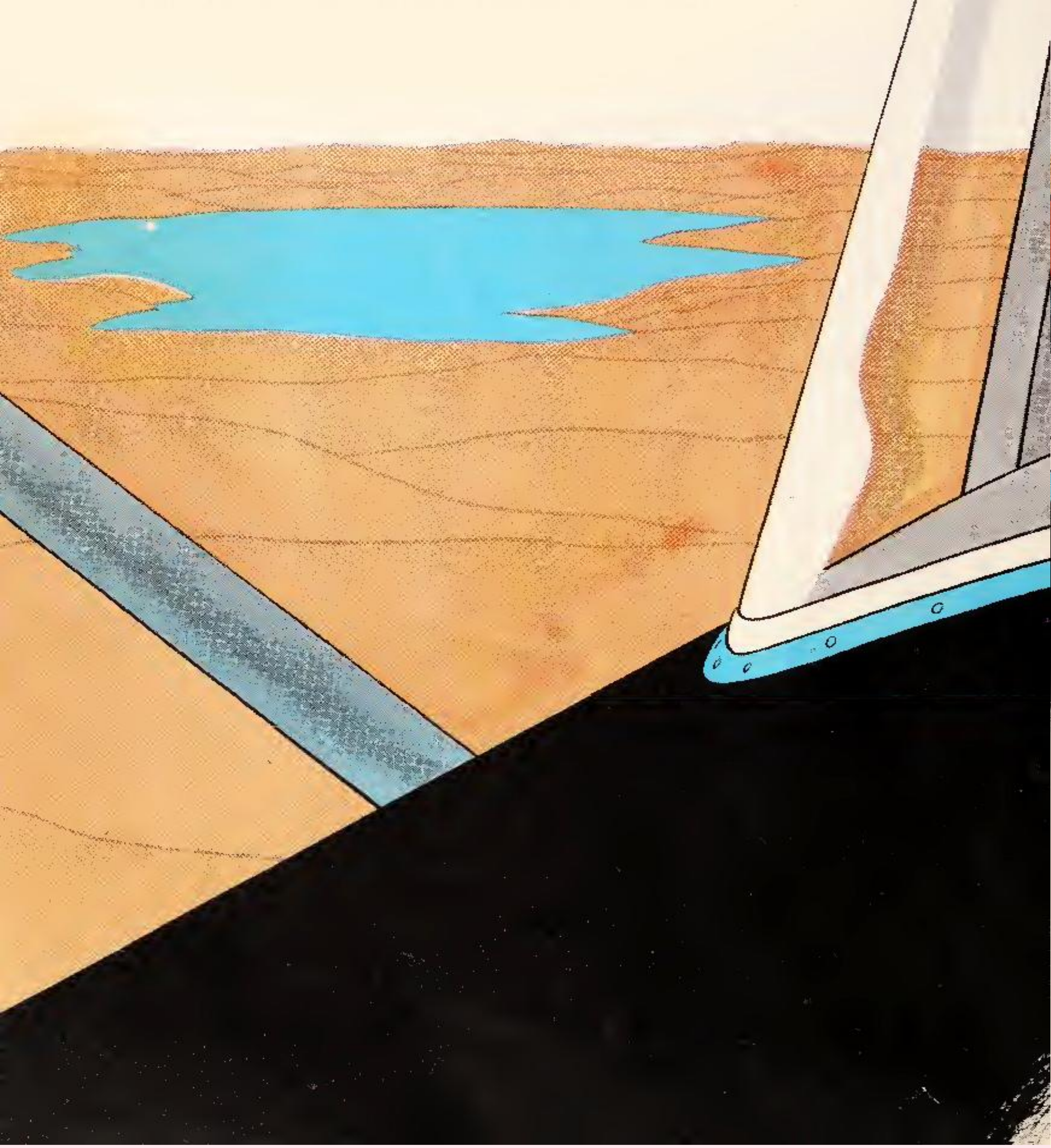






''और मज़ा लेना हो तो
तुम नीचे देखा,'' पिता ने कहा।
हम एक नए शहर के ऊपर से जा रहे हैं।
तुम्हारी दाहिनी ओर जल्द ही
तुम्हें एक झील दिखेगी।
उसका नाम लेक मीड है।''

“लेक मीड,” एन ने कहा। “मुझे वह दिख रही है।
और मुझे उसके बारे में सब पता है।
वह इन्सानों की बनाई झील है।





“और हम उसी पर उतरने वाले हैं,”
पिता बोले। “क्योंकि हमें अब
जहाज़ के लिए और पेट्रोल चाहिए।”

पिता ने जहाज़ को
हवा की दिशा में मोड़ा। हवा ने
जहाज़ की रफ्तार कम करने में मदद की।
पिता ने इंजन भी धीमा किया।





वे किसी चिड़िया की तरह नीचे उतरने लगे।
नीचे, और नीचे, ताकि पानी पर उतर सकें!

लेक मीड! हवाई जहाज़ के दो लम्बे फ्लोटों ने जहाज़ को पानी के सतह के ऊपर रखा। जब जहाज़ उतरा हर ओर पानी छलका। अब जहाज़ नाव-सा बन चुका था।

पिता ने जहाज़ को पेट्रोल पम्प की ओर बढ़ाया।





अब उनके पास पेट्रोल था,
सो वे उड़ चले।
ऊपर! और ऊपर!



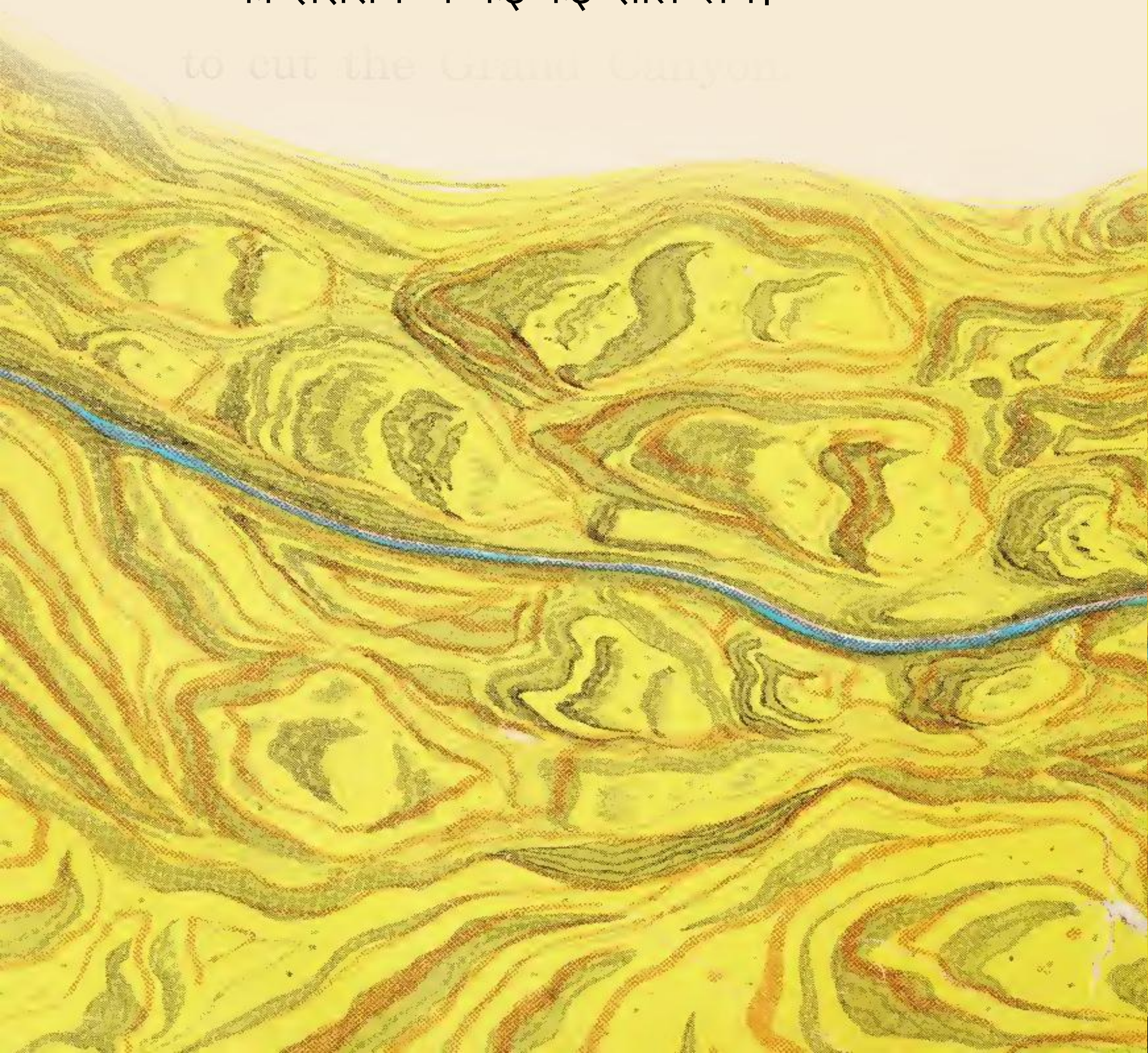
“हम कितनी ऊँचाई पर हैं ना!” एन ने कहा।

“क्या तुम जानना चाहोगी कि हम कितने ऊपर हैं?” पिता ने पूछा। “इस छोटी सूई को देख रही हो, जो आठ पर है। यह बता रही है कि हम आठ हज़ार फीट की ऊँचाई पर उड़ रहे हैं। अब इतने ऊपर से हम ग्रैंड कैनयन (खड़ी ढलानों वाली घाटी) को देख सकेंगे।
हम जल्द ही उसके करीब होंगे।”



ग्रैंड कैनयन बहुत ही बड़ा है!
और बेहद गहरा भी। कैनयन
में वहाँ बहुत नीचे पानी है।

एक समय था जब पानी ज़मीन की
तक भरा था। इसके बाद पानी
धरती को नीचे, और नीचे तक
काटता-तराशता रहा। ग्रैंड कैनयन
को तराशने में कई-कई साल लगे।



एन और उसके पिता ग्रैंड कैनयन के
ठीक ऊपर से उड़े। क्या मज़ा आया!
वे दूर तक उड़ते चले।



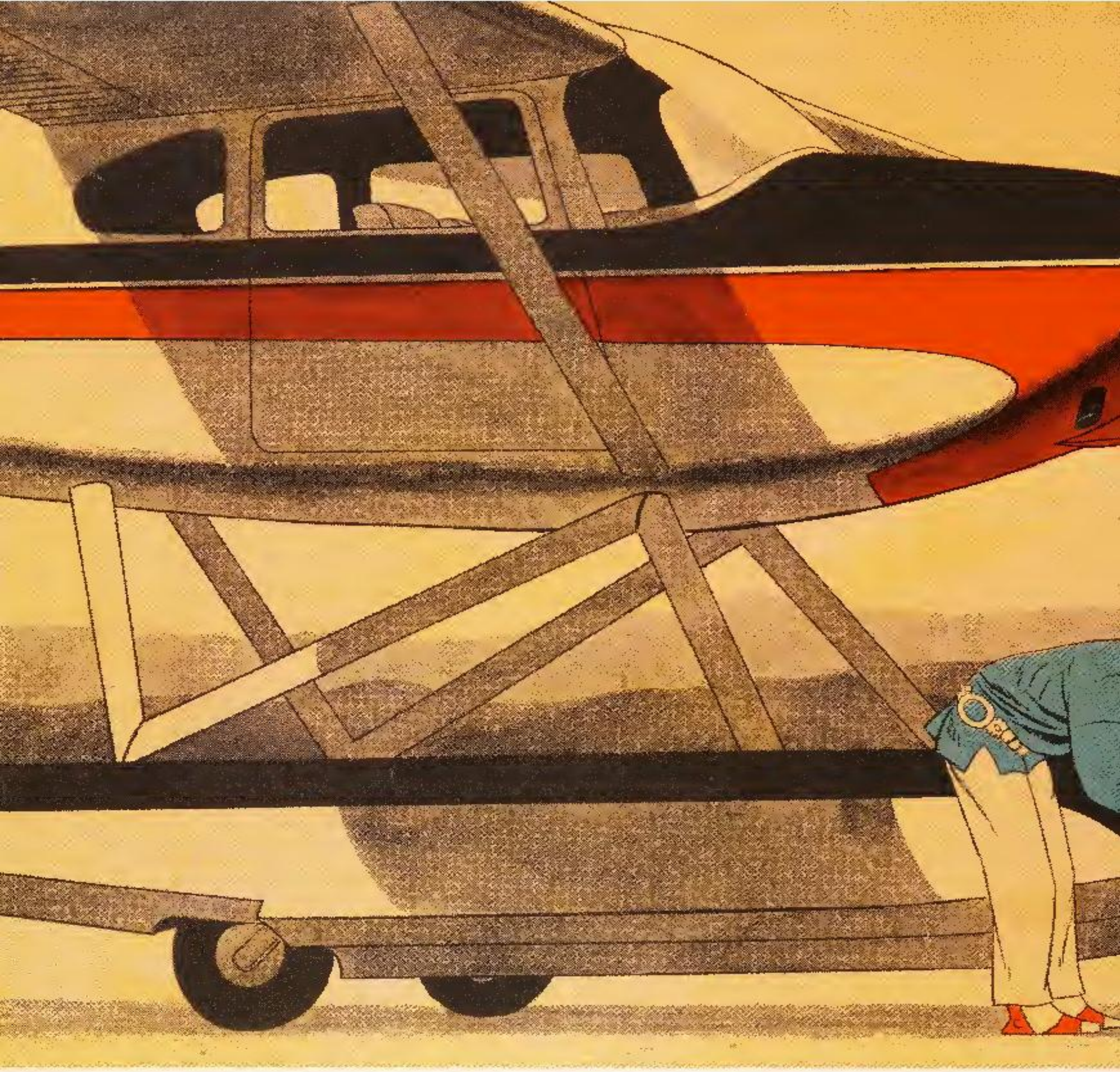
वे अब ग्रैंड कैनयन को पार कर चुके थे।
सूरज भी नीचे उतर चुका था।

''सूरज कितना लाल है,'' एन ने कहा।
''वह बस डूबने ही वाला है।''

"हमें रात को रुकना होगा,''
पिता ने कहा। ''हम वहाँ नीचे
उस छोटे-से हवाई अड्डे पर उतरेंगे।''

पिता ने हवाई अड्डे पर उतरने के लिए
हवाई पट्टी ढूंढ़ी।
और वे नीचे उतर गए।

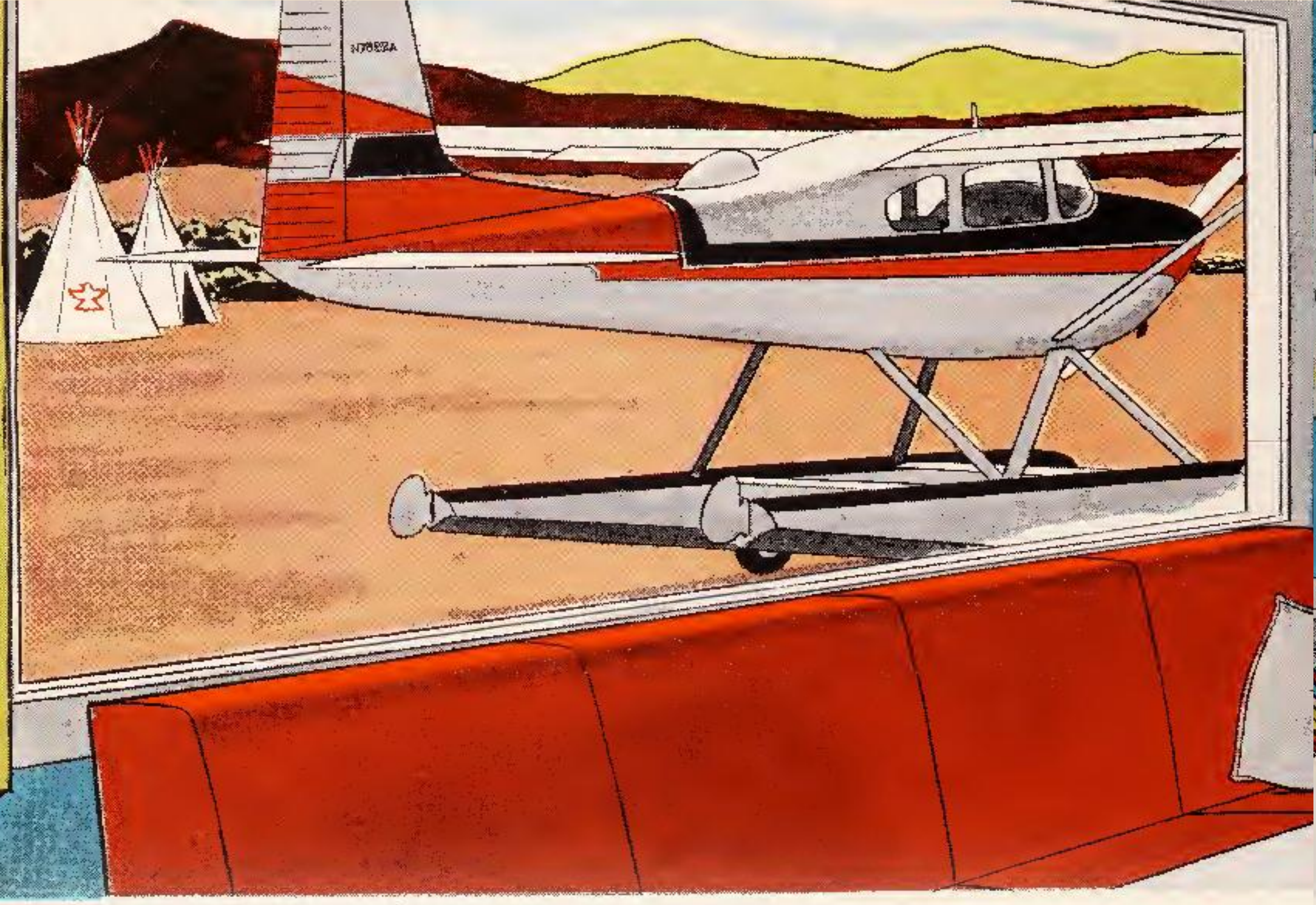




वहाँ कई इण्डियन (अमरीका के मूल निवासी) थे।
उनमें से एक ने जहाज़ की देखभाल की।



''चलो एन,'' पिता बोले।
''हम पहले कुछ खाएंगे,
तब सो जाएंगे। कल सुबह
कैम्प (शिविर) लेक वुड के लिए उडेंगे।''

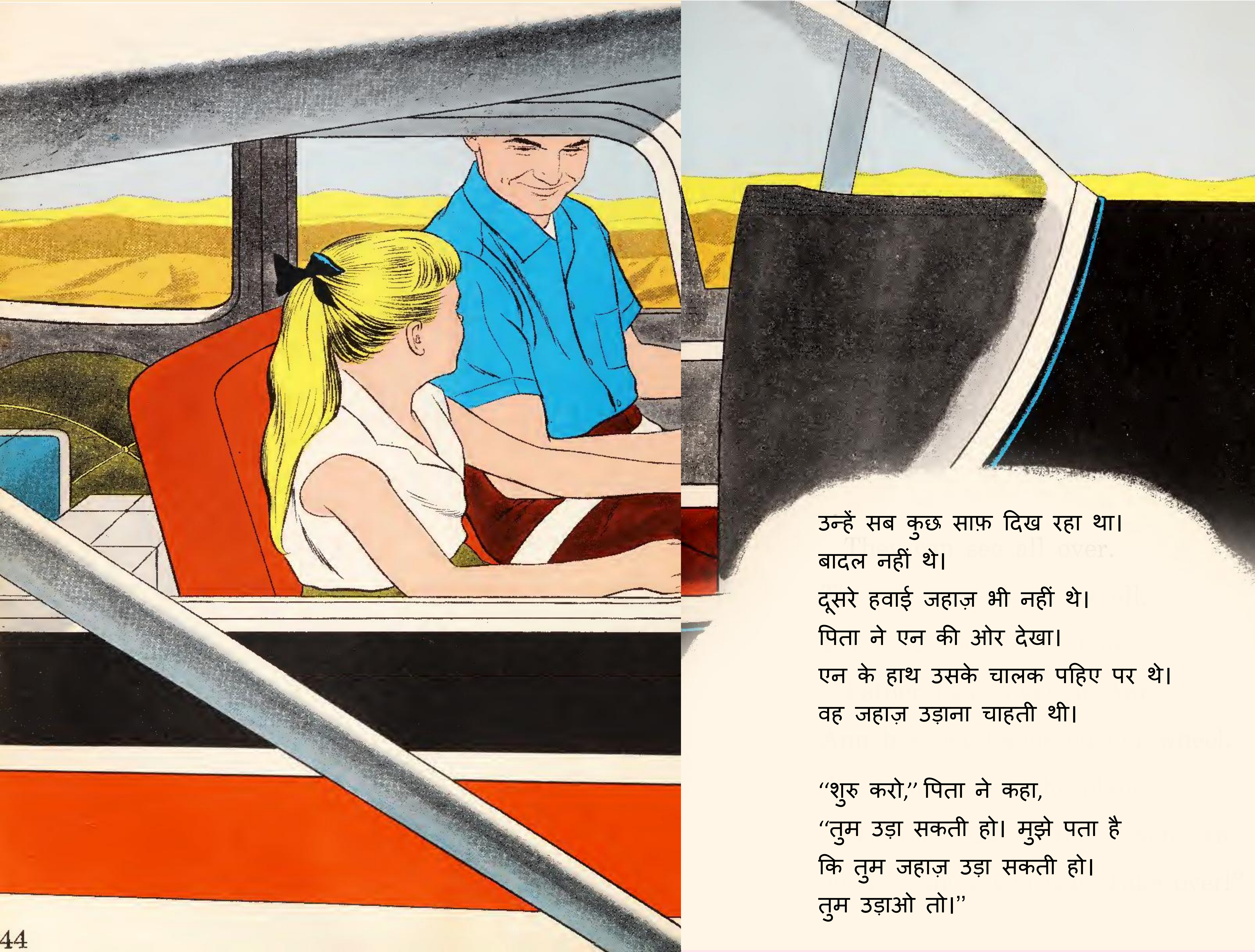


सो अगली सुबह एन और उसके पिता
सूरज उगने के साथ जाग गए।
हवाई जहाज़ उड़ने के लिए तैयार था।



पिता ने हवा और बादलों की
जानकारी लेने के लिए फोन किया।
उन्हें पता चला कि कैम्प लेक वुड के पास
कुछ बादल हैं। पर वे बहुत बड़े नहीं हैं।

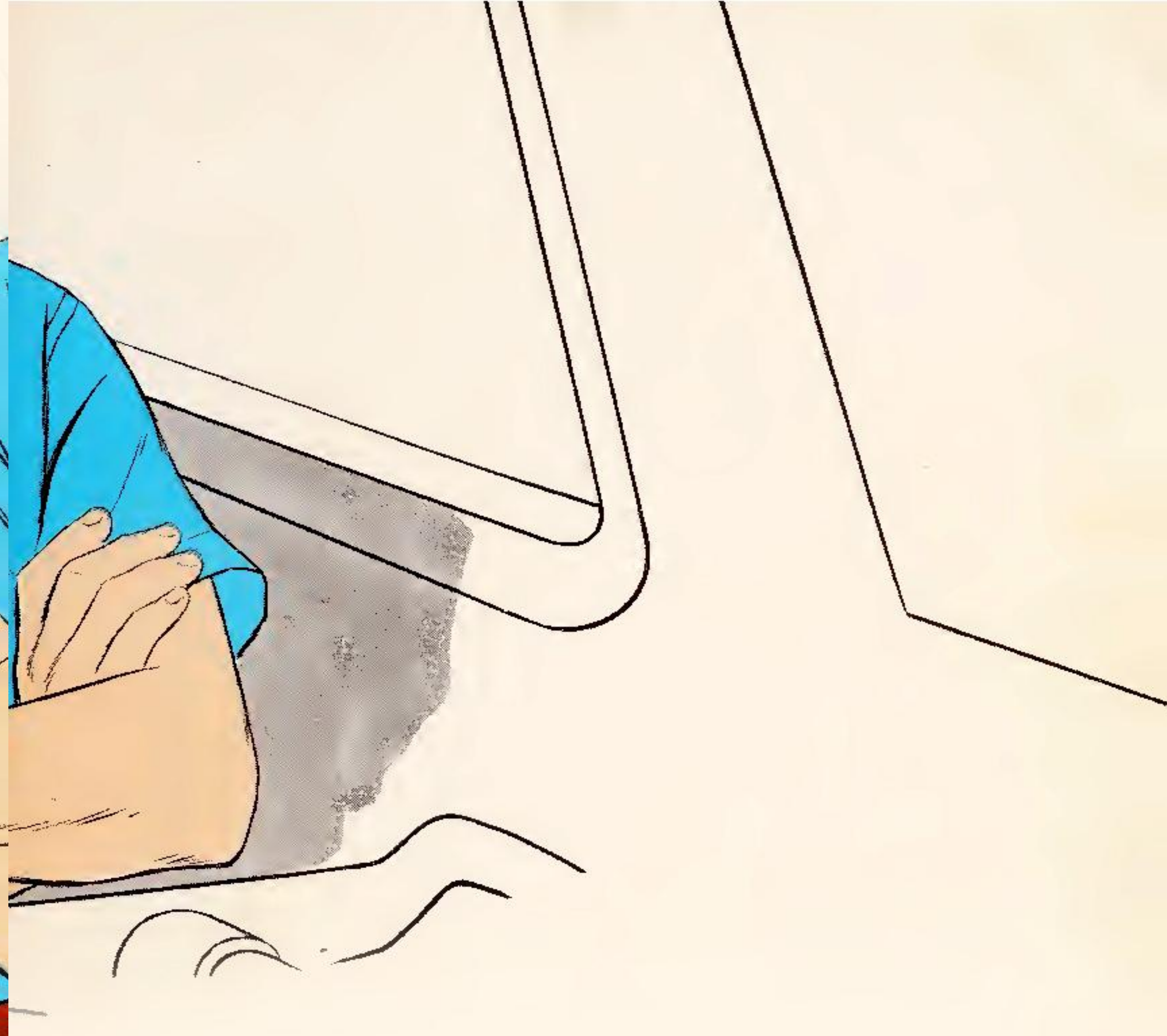
"क्या हम निकल सकते हैं?" एन ने पूछा।
"हाँ," पिता बोले। "थोड़े से बादल ज़मीन
को ढ़क नहीं देंगे। अगर हम ज़मीन को देख
सकें, तो हम उड़ सकते हैं।
चलो चलें।"



उन्हें सब कुछ साफ़ दिख रहा था।
बादल नहीं थे।
दूसरे हवाई जहाज़ भी नहीं थे।
पिता ने एन की ओर देखा।
एन के हाथ उसके चालक पहिए पर थे।
वह जहाज़ उड़ाना चाहती थी।

"शुरु करो," पिता ने कहा,
"तुम उड़ा सकती हो। मुझे पता है
कि तुम जहाज़ उड़ा सकती हो।
तुम उड़ाओ तो।"





"कैम्प लेक वुड ज़रा ही आगे है,"
पिता ने कहा।
"चालक पहिए को थामे रहो।
देखो, एन! तुम जहाज़ उड़ा रही हो!"



“मुझे देखो!” एन खुशी से चीखी,
“मुझे जहाज़ उड़ाते देखो!”

“देख रहा हूँ, एन,” पिता ने कहा।
“पर मुझे उस ओर एक बादल दिख रहा है।
काफी गहराया लग रहा है।
यह आया कहाँ से?
मुझे अब जहाज़ संभालना होगा।”





अब उनके सामने एक और बादल था।
ठीक उनके रास्ते में।
वे घने काले बादल थे।
बारिश के बादल।



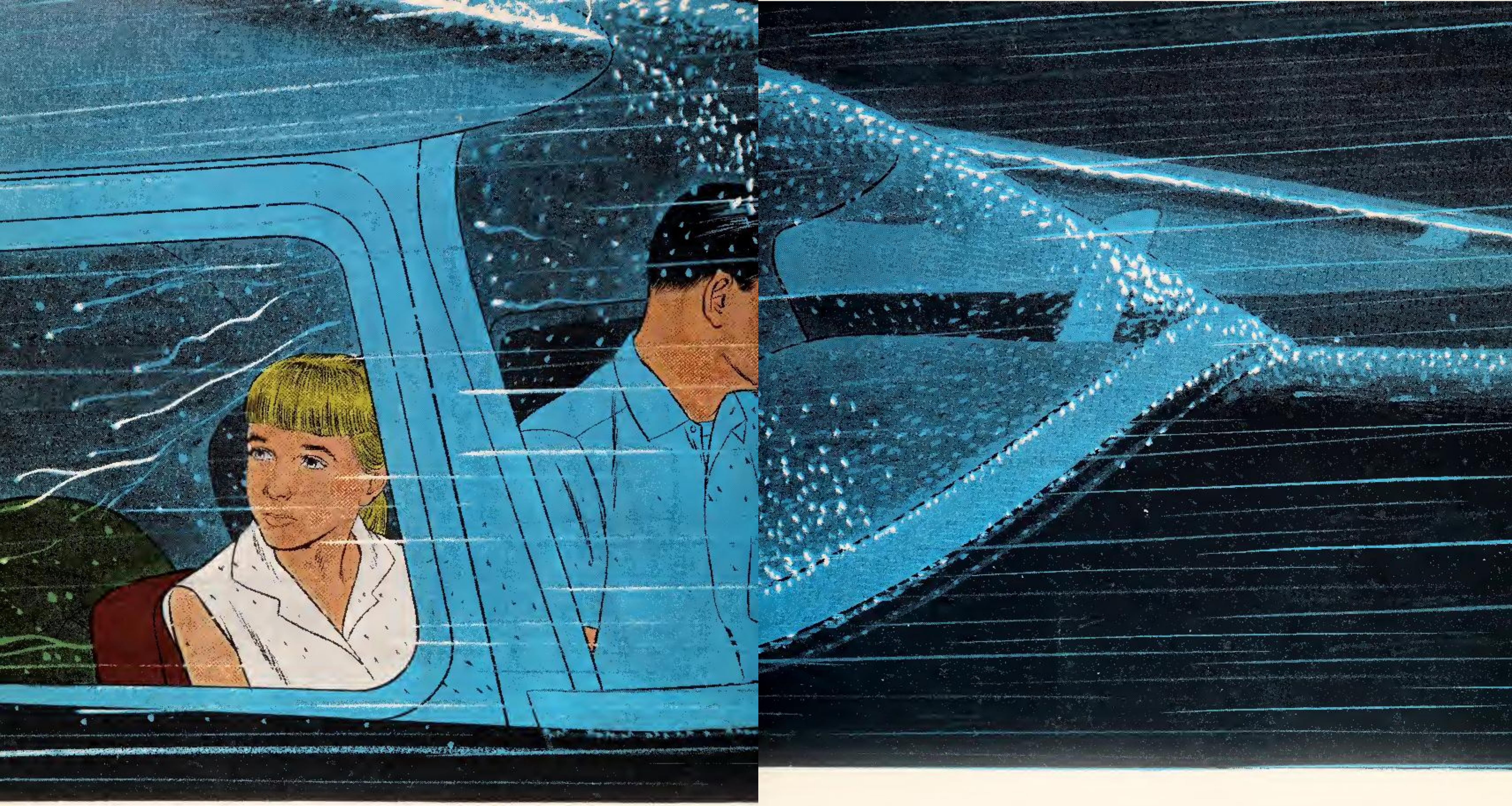
पिता जानते थे कि दोनों बादल
जल्द ही एकमेक हो जाएंगे।

उन्हें स्थिति ठीक नहीं लगी।
उन्होंने जहाज़ को कुछ नीचे उतारा।



और, और बादल घिर आए।
सबके सब काले।
वे तेज़ी से आए थे।

पिता ने कहा, "हम तुम्हारे कैम्प के पास
आ गए होंगे। तुम नीचे नज़र रखना।"
एन ने घूर-घूर कर देखा।
"मुझे तो कुछ दिख ही नहीं रहा है,"
वह बोली। "कुछ भी नहीं।"

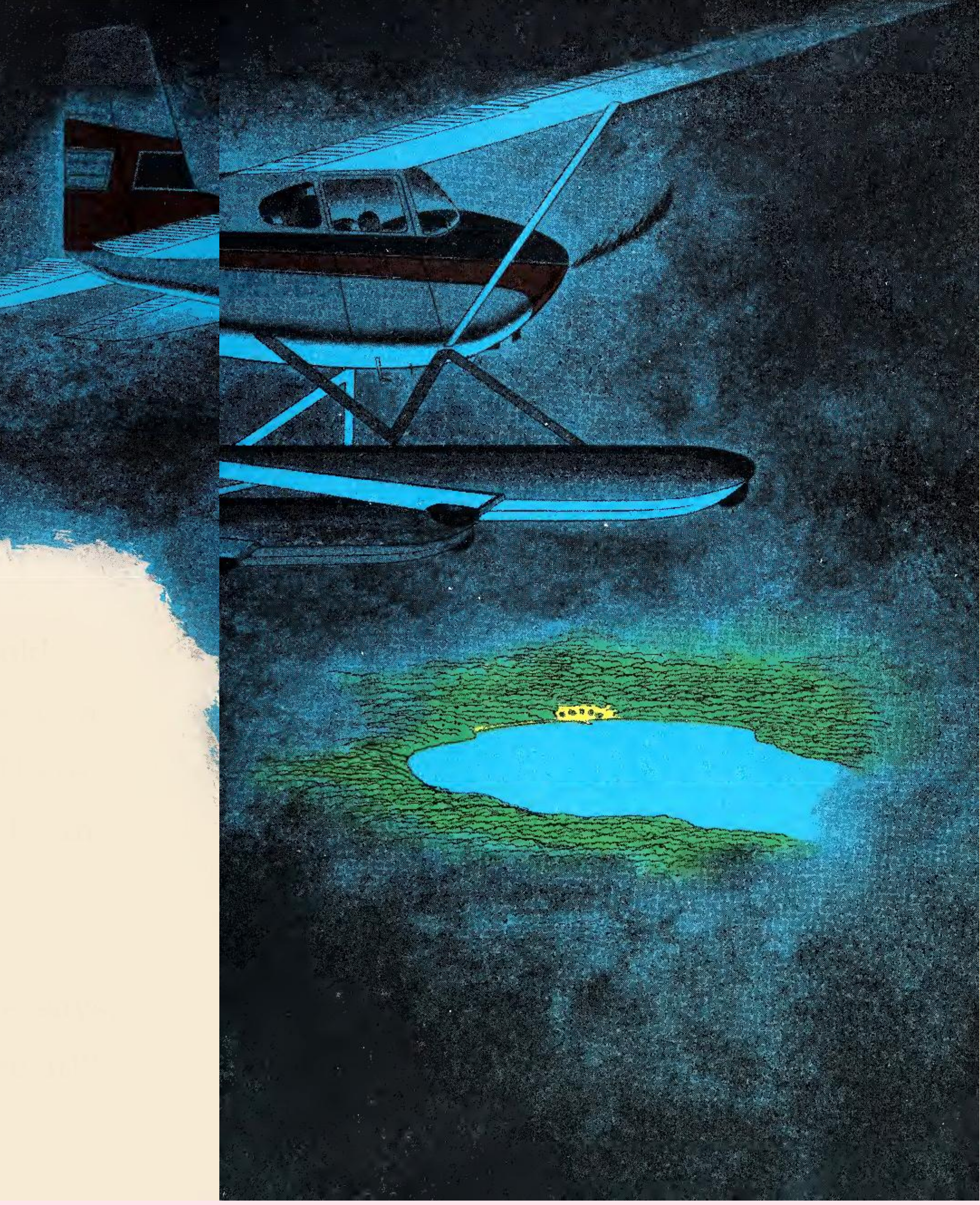


बादल उनको चारों ओर से घेरे थे।
हवा जहाज़ को धकेल रही थी।
सीटों की पट्टियों ने उन्हें थाम रखा था।

अब बारिश शुरू हो गई। वह भी कैसी!
घमासान बारिश होने लगी।

पिता ने जहाज़ की रफ्तार बढ़ाई।
वे उड़ते रहे, आगे, और आगे।

"ओह!" एन बोल उठी। "देखो तो!"
वहाँ नीचे देखो। वहाँ बादलों के बीच
एक छोटा-सा सुराख है!
वहाँ एक झील है। देखो!
मुझे कैम्प दिख रहा है।"
पिता हंसे,
"मुझे भी दिख रहा है," वे बोले।
"और उसे देख मैं बहुत खुश हूँ!"



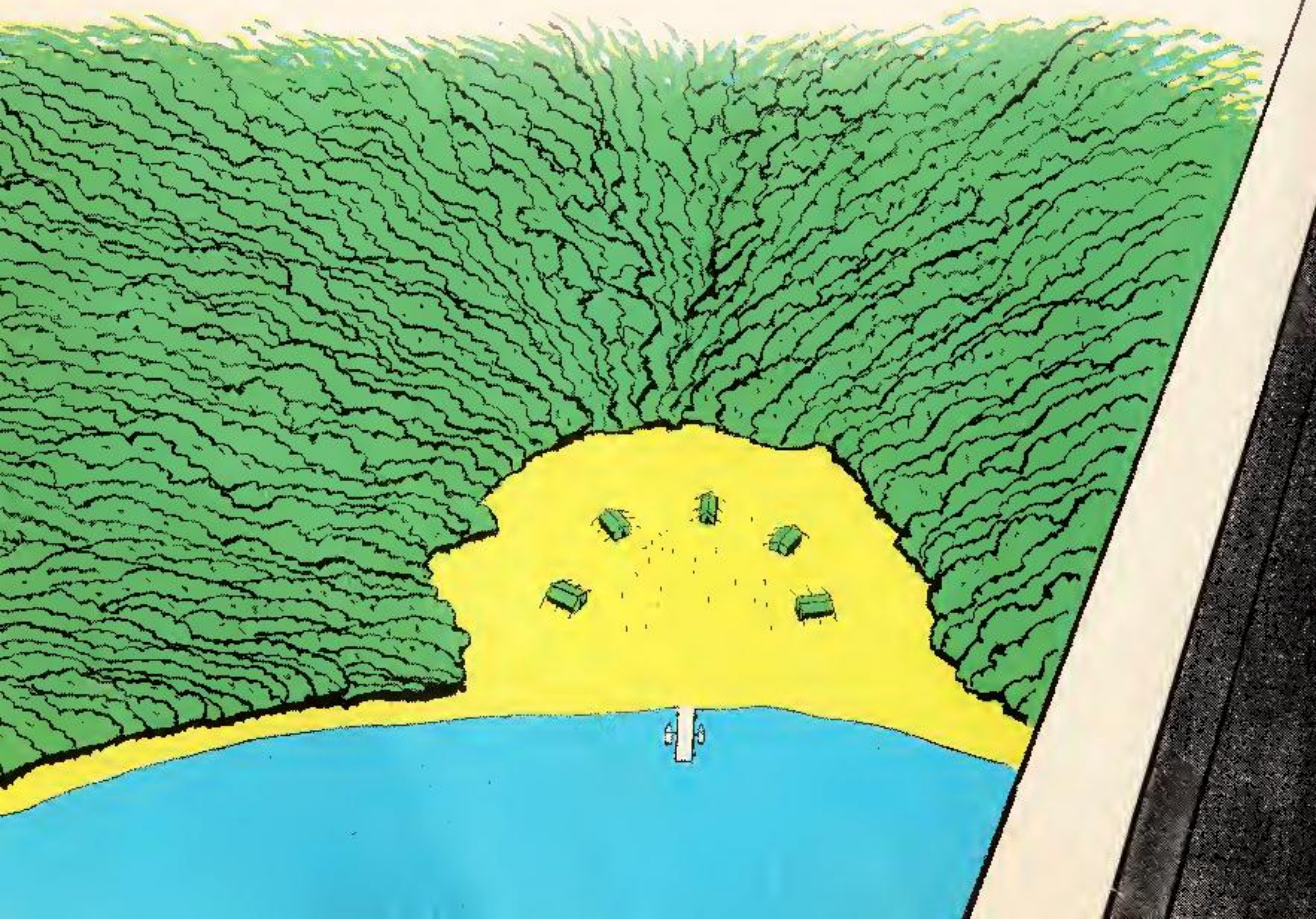
पिता ने जहाज़ को
शिविर की ओर मोड़ा।
''क्या तुम फिर से चालक पहिया
पकड़ना चाहोगी?'' पिता ने पूछा।
''क्या तुम शिविर के ऊपर से
जहाज़ को उड़ाना चाहोगी?''





''ओह!'' एन ने कहा, ''क्या सचमें?
लड़कियाँ मुझे देखेंगी। उन्हें पता लग
जाएगा कि मैं जहाज़ उड़ा सकती हूँ।''

एन ने चालक पहिया पकड़ा।
वह जहाज़ को शिविर के ठीक ऊपर से
उड़ाती चली।
सभी लड़कियाँ तम्बुओं से
बाहर निकल, आसमान की ओर देखने लगीं।
एन ने चीख कर कहा,
''देखो! मुझे जहाज़ उड़ाते देखो तो!''
पिता हंसे।
''वे तुम्हें सुन नहीं सकतीं एन,'' वे बोले।









उस रात अलाव के गिर्द बैठ
लड़कियों ने एन को सुना।
एन ने उन्हें सब कुछ बताया।
''किसी दिन तुम भी उड़ाओगी जहाज़,''
उसने लड़कियों से कहा। ''तुम्हें जहाज़
उड़ाना बहुत अच्छा लगेगा, देखना।''



